International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 15-05-2026, Accepted: 15-06-2026, Published: 30-06-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 212-215

# बौद्ध दर्शन में नारी की स्थिति: एक आलोचनात्मक विमर्श

**दमयंती बाई**
शोधार्थी, दर्शनशास्त्र विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत
**DOI:** https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.2.12151

**सारांश**
यह लेख तथागत बुद्ध के स्त्री संबंधी दृष्टिकोण को विश्लेषित करता है, जो आरम्भ में नकारात्मक था, लेकिन आनन्द के आग्रह और समयानुसार उसमें सकारात्मकता की ओर बढ़ा। इस लेख के माध्यम से बुद्ध की जातक कथाएँ, थेरीगाथाएँ, त्रिपिटक और अन्य बौद्ध साहित्य में स्थित स्त्री सम्बंधित विचारों का गहन मूल्यांकन किया गया है। बुद्ध का प्रारम्भिक स्त्री दृष्टिकोण काफ़ी नकारात्मक था, वे स्त्री को संघ में प्रवेश देने के पक्षधर नहीं थे। स्त्रियों को संघ में प्रवेश देने के लिए आठ नियम बनाये गये, जिनसे स्पष्ट होता है कि स्त्रियों को पुरुषों के समान स्वतन्त्रता संघ में भी नहीं थी। थेरीगाथा नारी मुक्ति के आंदोलन और स्त्री विमर्श के लिए महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें स्त्रियों की अपनी अलग दुनिया है कृ उनके सुखों की अनुभूति है, दुःखों का गान है, पीड़ा है, मुक्ति की चाह है और मोक्ष प्राप्त करने की आकांक्षा है। बुद्ध ने स्त्री–हित में महत्वपूर्ण कार्य किए, लेकिन कहीं–कहीं उनके विचारों में द्वंद नज़र आता है। पूरी तरह बुद्ध भी पितृसत्ता विचारों से उभर नहीं पाए। बुद्धकाल से शुरू हुआ स्त्री संघर्ष की प्रतिध्वनि वर्तमान समय में भी सुनाई देती है।

**मूल शब्दः** बौद्ध दर्शन, थेरीगाथा, स्त्री–विमर्श, संघ–प्रवेश, पितृसत्ता, लैंगिक समानता

बौद्ध दर्शन, भारतीय दर्शन की श्रमण परम्परा का प्रतिनिधि दर्शन है। बुद्ध ने चार आर्य सत्यों पर आधारित जिस जीवन–दर्शन की रचना की, उसमें मानव और मानव के पारस्परिक संबंधों को जानने और समझने का प्रयास किया गया है। गौतम बुद्ध ने जो कुछ भी ज्ञान व प्रवचन दिए, उनका संकलित रूप हमें त्रिपिटक, थेरीगाथाओं और जातक कथाओं में मिलता है। इन्हीं कथाओं में जब हम बुद्ध के स्त्री संबंधी विचारों का अवलोकन करते हैं, तो पाते हैं कि बुद्ध का प्रारम्भिक स्त्री दृष्टिकोण काफ़ी नकारात्मक था। वे स्त्री को संघ में प्रवेश देने के पक्षधर नहीं थे, तथा प्रवेश देने के बाद भी उनका कहना था कि स्त्रियों को प्रवेश देने से यह धर्म कम समय तक चलेगा। उनका तीसरा नकारात्मक पक्ष था–स्त्रियों को संघ में प्रवेश देने के लिए आठ नियम, जिनसे स्पष्ट होता है कि स्त्रियों को पुरुषों के समान स्वतन्त्रता संघ में भी नहीं थी।

यह लेख तथागत बुद्ध के स्त्री संबंधी दृष्टिकोण को विश्लेषित करेगा, जो आरम्भ में नकारात्मक होता है, लेकिन आनन्द के आग्रह और समयानुसार उसमें सकारात्मकता की ओर बढ़ा। बुद्ध एक ऐसे महामानव थे जिन्होंने स्त्रियों को समानता और स्वतन्त्रता प्रदान करनेका मार्ग प्रशस्त किया। इस लेख के माध्यम से बुद्ध की जातक कथाएँ, थेरीगाथाएँ, त्रिपिटक और अन्य बौद्ध साहित्य में स्थित स्त्री सम्बंधित विचारों का गहन मूल्यांकन किया जायेगा।

जिस काल में बौद्ध दर्शन का प्रचार–प्रसार शुरू हुआ, उस समय समाज में भेदभाव, उत्पीड़न, अन्याय, हिंसा और शोषण व्याप्त था। उस समय समाज वर्णव्यवस्था और जाति प्रथा पर आधारित था। अंधविश्वास, पाखंड और जादू टोना आदि प्रचलन में थे लेकिन बुद्ध ने इन सभी का विरोध किया और मध्यम मार्ग का अनुसरण करते हुए, ऐसे समाज की परिकल्पना की जो नैतिक मूल्यों पर निर्भर मानवतावादी परिकल्पना थी–एक ऐसा समाज जहाँ अन्याय, भेदभाव, ऊँच–नीच आदि का अभाव हो तथा समाज विशुद्ध रूप से नैतिक व मानवीय मूल्यों पर केंद्रित हो।

किंतु, कुछ जातक कथाओं और बौद्ध साहित्य में ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहाँ स्त्री–संघ प्रवेश के प्रश्न पर बुद्ध और उनके शिष्य आनंद के मध्य संवाद देखने को मिलता है। जब आनंद बुद्ध से सवाल करते हैं तो बुद्ध स्त्री प्रव्ज्जा के पक्ष में नहीं थे लेकिन जब आनंद उनसे कहता है कि ''भंते! क्या तथागत–प्रवेदित धर्म में घर से बेघर प्रव्रजित हो, स्त्रियाँ स्रोत–आपत्तिफल, सकृ दागामि–फल, अनागामि–फल, अर्हत्व–फलको साक्षात कर सकती हैं?'' तो बुद्ध उत्तर देते हैं कि ''साक्षात कर सकती हैं, आनन्द! तथागत–प्रवेदित।'' (सांस्कृत्यायन ५८७)

तब आनंद बोला अगर ऐसा है तो जिस मौसी (महाप्रजापति गौतमी) ने भगवान को माँ के अभाव में दूध पिलाकर बड़ा किया, उसकी प्रार्थना पर स्त्रियों को प्रव्ज्जा दे दी जाए। बुद्ध इस संदर्भ में विचार करते हैं। स्त्री के संबंध में शायद पहले बुद्ध ने सोचा ही नहीं था लेकिन बाद में अपने विचारों में परिवर्तन करते हुए महाप्रजापति गौतमी से कहा कि आठ नियम स्वीकार हो तो प्रव्ज्जा की अनुमति दे दी जाएगी।

**ये आठ नियम इस प्रकार हैं**

1. भिक्षुणी संघ में चाहे जितने भी वर्ष से रह रही हो तो भी उसे चाहिए कि वह छोटे बड़े भिक्षुओं को प्रणाम करे।
2. जिस गांव या जगह पर भिक्षु न हो वहाँ पर भिक्षुणी अकेले नहीं रह सकती।
3. हर पखवाड़े में उपदेश किस दिन है और धर्मोपदेश सुनने के लिए कब आना है ये सब भिक्षु–संघ से पूछा जाए।
4. चारों मास के बाद भिक्षुणी को भिक्षु–संघ और भिक्षुणी–संघ की प्रवारणा करनी चाहिए।
5. जिस भिक्षुणी से संघादेश से आपत्ति हुई तो उस संघ में पंद्रह दिनों का मानत लेना चाहिए।
6. जिसमे दो वर्षों तक अध्ययन किया हो ऐसी श्रमणरिको दोनों संघ मिलकर उपसंपदा दे सकते हैं।
7. किसी भी कारण से भिक्षुणी भिक्षु को गाली–गलौच न दें, भिक्षु भिक्षुणी को उपदेश दे।
8. भिक्षुओं के संबंध में कुछ कहने का मार्ग भिक्षुणियों के लिए निरुद्ध होगा।

इन आठ नियमों का पालन करने वाली स्त्री को प्रवज्जा दे दी जाएगी (सांस्कृत्यायन)।

यह आठ नियम स्पष्ट रूप से स्त्री को पुरुषों के अधीन बनाते हुए नज़र आते हैं। जब पुरुष स्वतंत्र रूप से भिक्षु बन सकते हैं तो

स्त्री क्यों नहीं? क्यों स्त्री अपने से छोटे भिक्षु को प्रणाम करेगी? यह लैंगिक समानता के सिद्धांत पर सवाल खड़ा करती हैं। क्यों भिक्षुणी को यहाँ पुरुषों के अनुसार ही रहना है? आठवें नियम में कहा गया है कि भिक्षुणी भिक्षु के बारे में कोई शिकायत नहीं कर सकती है। इसका कारण क्या है? संघ में भी पुरुष ही सर्वोपरि थे इसलिए बुद्ध ने स्त्रियों के लिए ही नियम बनाये और नियम भी ऐसे जिसमें भिक्षु का स्थान ऊँचा रखा गया, या फिर बुद्ध के विचार दोयम तरीके के थे। जो पुरुष को नीचा भी नहीं दिखाना चाहते थे और स्त्री को संघ में प्रवेश भी मिल गया। इसका कारण उस समय की समाज व्यवस्था रही हों।

थेरीगाथा और जातक कथाओं का यदि वर्तमान समय को देखते हुए विश्लेषण करे तो, यह आज भी स्त्री–जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होती है। क्योंकि ये किसी पुरुष के द्वारा लिखित नहीं हैं, बल्कि उस समय बौद्ध भिक्षुणियों द्वारा लिखे गये गीत हैं, जो तत्कालीन सामाजिक रूढ़ियों और परम्पराओं का आत्म–साक्षात्कार करवाते हैं। इन गीतों में वर्णित है कि स्त्रियों ने किस प्रकार निर्वाण मार्ग को प्राप्त किया और निर्वाण पथ के समय जो ज्ञान और अनुभव का आभास किया, उसको बड़े ही मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है।

इन स्त्रियों ने पुरुष के समान आध्यात्मिक मार्ग पर भी अपनी पहचान बनाई। जो स्त्रियाँ ग्रहस्थ जीवन में रहने वाली थीं और उपासिकाएँ थीं, उन्होंने भी बौद्ध दर्शन के विकास में आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण योगदान दिया। एक स्त्री की प्रशंसा करते हुए बुद्ध ने कहा है कि ''यह महिला सांस्कृतिक वातावरण में रहती है और राजा–रानियों की कृपा–पात्र है, तो भी इसका हृदय स्थिर और शांत है। इसकी अवस्था युवा हैं और यह धन तथा ऐश्वर्य से घिरी हैं, फिर भी यह कर्तव्य पथ में अविचल और विचारशील है। यह इसी संसार में दुर्लभ चीज़ है'' (नरसू)।

थेरी गाथाओं में भिक्षुणियों ने कहा है कि भिक्षुणी बनने से पहले उनके जीवन में निराशा थी और जीवन में अंधकार छाया हुआ था लेकिन अब वे बुद्ध की कन्याएँ हैं, बुद्ध की पुत्रियाँ हैं– उनके मुख से उत्पन्न, उनके हृदय से उत्पन्न। बुद्ध के साथ संबंध इस प्रकार बताने से ज्ञात होता है कि उनके मन में बुद्ध के लिए कितना आदर भाव है। थेरी गाथाओं में भिक्षुणी अपने जीवन का वर्णन करती हुई कहती हैं कि उनका जीवन पहले कैसे हुआ करता था। भिक्षुणी सुंदरी नंदा कहती है कि शास्ता के उपदेश को सुनकर –

इस देह में मुझको वैराग्य उत्पन्न हुआ
मैं अंदर से राग मुक्त हो गई
देह से अपनापन तोड़ दिया
पुरुषार्थ में लीन अनासक्त उपशांत
आज मैं निर्वाण की परमशांति का अनुभव कर रही हूँ
आज मैं निर्वाण प्राप्त हूँ परम शांत हूँ! (कीर्ति)

इस गीत में नन्दा ने अपने ज्ञान के बाद के जीवन का वर्णन किया है जिससे यह स्पष्ट होता है कि बुद्ध के संघ में आकर स्त्रियों ने परम शांति को प्राप्त किया और सांसारिक जीवन से मुक्ति प्राप्त की !

इसी प्रकार भिक्षुणी सुमंगलमाता अपने भिक्षुणी पूर्व कष्टमय और दरिद्रमय जीवन का वर्णन करते हुए कहती हैं कि –

अहो! मैं मुक्त नारी !
मेरी मुक्ति कितनी धन्य है
पहले मैं मूसल लेकर धान कूटा करती थी
आज उस से मुक्त हुई
मेरी दरिद्रवस्था के वे छोटे छोटे बर्तन
जिनके बीच में मैं मैली कुचली बैठती थी और मेरा निर्लज्ज पति मुझे उन छातों से भी तुच्छ समझता था जिन्हें वह अपनी जीविका के लिए बनाता था

उस जीवन की आसक्तियों और मलों को मैंने छोड़ दिया
मैं आज वृक्ष मूलों में ध्यान करती हूँ
जीवन यापन करती हूँ
अहो अब मैं कितनी सुखी हूँ (कीर्ति)

थेरी सुमंगलमाता का जीवन उस समय में कोई मूल्य नहीं था। उसका पति उससे अपनी छातों के समान भी नहीं समझता था। उस समय स्त्री को मानव तो दूर, कमाई के साधनों के बराबर भी नहीं समझा जाता था। ऐसे समय में जब बुद्ध के संघ में प्रवेश मिलने पर स्त्रियों के जीवन में कितना परिवर्तन हुआ होगा ये अनुमान लगाया जा सकता है। इसीलिए थेरीगाथाओं ने कहा है कि 'अहो! मैं' कितनी सुखी हूँ!' अर्थात, स्त्रियों ने बुद्ध के संघ में आकर पहली बार सांसारिक दुः खों से मुक्ति महसूस की, जिसका व्याख्यान इस ग्रन्थ में किया है।

बाह्य सौंदर्य एक ही वजह है आंतरिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए आम्रपाली कहती है कि–

"एदिसो अहु अयं समुस्सयो, जज्झरो बहुदुक्खानमालयो।
परिपतितपलेपनो घरों, सच्चवादिवचनं अनञ्ञथा॥ (सुजातो)

आम्रपाली, जो एक नगरवधू या वेश्या के नाम से प्रसिद्ध थी, बुद्ध की भिक्षुणी बनने के बाद अपने सुन्दर शरीर को खोखला मानने लगी थी। उसने अनुभव किया कि संसार और शरीर दोनों ही दुःख के कारण हैं जो स्थायी भी नहीं है। यदि कुछ सत्य है, तो वह है ज्ञान और दुः खों से मुक्त जीवन, उस पर चलकर परमशांति को प्राप्त किया जा सकता है, जो मार्ग बुद्ध ने दिखाया है।

इस प्रकार ज्ञात होता है कि नारी केवल श्रद्धा और आस्था रखने वाली ही नहीं होती बल्कि बुद्धिवाद में पुरुषों से किसी भी प्रकार कम नहीं है। भिक्षुणियों में मानवतावाद कूट कूटकर भरा हुआ है। उन्होंने बुद्ध के उपदेशों को जन जन तक पहुंचाने का महान कार्य किया और अपने विचारों से लोगों को काफी प्रभावित किया।

भिक्षुणी पटाचारा की एक शिष्या कहती हैं कि "लोग मुसलों से धान कूट कूटकर अर्थार्जन करते हैं और अपने स्त्री पुत्र–पुत्रादि का पालन पोषण करते हैं; तो फिर तुम भी बुद्ध के शासन का अभ्यास क्यों नहीं करती, जिससे करके पछताना नहीं पड़ता?" (कीर्ति)

पटाचारा के इन वचनों को सुनकर हम सब पैर धोकर एकांत में ध्यान के लिए बैठ गईं और चित्त की समाधि से युक्त होकर अपने बुद्ध शासन को पूरा किया।

पटाचारा स्वयं एक ऐसी भिक्षुणी थी जिन्होंने अपने पूरे परिवार को खो दिया था और वह चारो ओर दुः खों से घिरी हुई थी। तब उस समय बुद्ध उसे समझाते हुए कहते हैं कि कोई रिश्ता हमेशा के लिए नहीं रहता है जगत नश्वर है। इसलिए अपने आपको पहचानो और ध्यान करो। उसके बाद पटाचारा एक ऐसी भिक्षुणी बनी जिसकी चर्चा आज भी बुद्ध थेरीयों में होती है। उसने बाद में बुद्ध दर्शन के विकास में अपनी भूमिका निभाई और संघ में प्रवचन भी देने का कार्य करती थी ।

मुक्ता एक ब्राह्मण परिवार की दरिद्र कन्या थीं। लेकिन उस समय ब्राह्मण समुदाय किसी को भी अपने बराबर नहीं समझता था। समाज में दो प्रकार के लोग थे एक दरिद्र और एक दूसरी ओर प्रतिष्ठित और धनवान। धनवान थे वे न तो किसी को अपने

बराबर समझते थे और न ही समानता का व्यवहार करते थे। परन्तु बुद्ध ने किसी प्रकार का भेदभाव न करते हुए, महाप्रजापति गौतमी और यशोधरा जैसी महारानियों के साथ प्रकृति जैसी मेहतरानी को भिक्षा देकर संघ में समानता का अधिकार दिया (नरसू)। बौद्ध युग में स्त्रियाँ शिक्षित व विद्वान हुआ करती थीं। शुभा, सुमेधा, अनुपमा, जैसी उच्चवंश की शिक्षित कन्याएं भी शिक्षा प्राप्त कर चुकी थीं। महारानी खेमा एक ख्याति प्राप्त शिक्षित स्त्री थी, जबकि सुभद्रा व्याख्यान–कला में विशेष प्रवीण थी। कुंडलकेशा अपने ज्ञान तथा तर्क में सुविख्यात थी। कुछ स्त्रियाँ शिक्षिकाएँ थीं जो उपाध्याया कही जाती थीं।

विवाह–प्रथा इस युग में वैदिक काल की तरह प्रभावित थी। विवाह गोत्र, प्रवर तथा पिंड के भीतर ही होते थे, किंतु जाति के बाहर नहीं। ममेरे, चचेरे, एवं फुफेरे भाई से भी विवाह प्रचलित था। अर्जुन और सुभद्रा का विवाह 'सहपिंड विवाह' का उदाहरण है। अजातशत्रु का विवाह अपने मामा कौशल नरेश की पुत्री बजीरा के साथ हुआ था। मघा ने अपनी चचेरी बहन सुजाता से विवाह किया था। इस काल में दहेज प्रथा प्रचलन में थी, विवाह की आयु 16 वर्ष थी तथा 'नियोग–प्रथा' का भी प्रचलन था (संत)।

बौद्धिक ज्ञान के अलावा संगीत, चित्रकला व गायन, नृत्य और लेखन आदि में भी शिक्षा दी जाती थी, बौद्ध युग में भी संगीत का अच्छा स्थान था। उस समय नगर का उल्लास–विलास विशेषकर गणिकाओं के संयोग से होता था। नगर की सुंदरता और शोभा उनके द्वारा अलौकिक होती थी। राजनर्तिकाएँ न केवल सम्मानित थी, बल्कि, राज्य के द्वारा सम्मान में आदर और पुरस्कार दिए जाते थे। वे श्रेष्ठ नर्तिकाएँ थी। जो संगीत व नृत्य कला में निपुण होती थी। जो दल की शोभा बढ़ाती थीं उनका रहन–सहन भी काफी उच्चस्तरीय था

बौद्धकाल में गणिकाओं को भी काफी प्रतिष्ठा प्राप्त थी। आम्रपाली, सुन्दावर्णा, सालवती, अत्यन्त रमणीय नैना और रूपवती– ये सभी प्रसिद्ध गणिकाएँ थीं, जिनके पुत्रों को भी सम्मान प्राप्त था। ललित कला के अतिरिक्त स्त्रियाँ और भी क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त करती थीं।

एक जातक कथा में 'हमारा' नामक स्त्री को व्यापार और वार्तालाप में कुशल बताया गया है (पिप्लायन)। एक अन्य जातक कथा में 'उदमरा' नामक रानी का उल्लेख मिलता है, जो लिखने और पढ़ने में निपुण थी। 'हैन्ड सॉन्ग' के कथन से यह ज्ञात होता है कि गुणी नालंदा अपनी लेखन शैली और बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध थी। सुप्रसिद्ध सम्राट हर्ष, जो बौद्ध धर्म के प्रकाण्ड विद्वान थे , द्वारा लिखित प्रसिद्ध ग्रंथ प्रियदर्शिका में एक स्त्री परिवार्जिका (सन्यासिनी) का उल्लेख मिलता है, जो एक नाटक लेखिका थीं, प्रियदर्शिका में गीत नृत्य में कुशल और बाद में प्रवीण स्त्रियों का चित्रण मिलता है। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार, बुद्ध के जीवनकाल में 73 स्त्रियों ने अर्हतत्व प्राप्त किया। थेरीगाथा और जातक कथाओं से निष्कर्ष निकलकर सामने आता है कि भिक्षुणी अपने जीवन अनुभवों को मुक्त भाव से अभिव्यक्त किया– चाहे वह भिक्षुणी होने से पहले और बनने के बाद में जो उन्होंने अनुभव किया। इन गाथाओं के माध्यम से अपने पूर्ण जीवन को बताने में संकोच करती हुई नजर नहीं आती है।

परंतु यह भी एक माना जाता है कि स्त्री–संघ प्रवेश को लेकर बुद्ध विचार एक भिन्न दृष्टिकोण में सामने आता है। बुद्ध ने आनंद से कहा था– "हे आनंद, यदि स्त्री को इस धर्म विषय में प्रवेश नहीं दी जाती, तो ये धर्म 1000 वर्ष तक कायम रहता; लेकिन स्त्री को संन्यास देने के कारण ये पांच वर्ष तक ही कायम रहेगा।" (सांस्कृत्यायन)

इस कथन से यह प्रतीत होता है कि उनको बुद्ध ने कुछ जगह पुरुषों के बराबर का दर्जा नहीं दिया, उनको पुरुषों की अपेक्षा कम आंका गया और स्त्री को पुरुषों के समान स्वतंत्रता भी नहीं थी। संघ में भी उनको पुरुषों से दबकर रहना होता था, आदर करना पड़ता था। दोनों के लिए अलग–अलग नियम बनाए गए थे। तथा महिलाओं के लिए दंड पुरुषों की अपेक्षा ज्यादा कठोर थे। बुद्ध के समय में स्त्री स्थिति में सुधार तो आया लेकिन पूर्ण स्वतंत्रता और समानता प्राप्त नहीं हुई थी। संघ में प्रवेश के लिए 'आठ नियमों' की शर्त स्त्रियों के लिए ही बनाना तथा नियमों का उल्लंघन करने पर स्त्रियों के लिए सजा पुरुषों की अपेक्षा ज्यादा होना आदि! यह सब बुद्ध के स्त्री सम्बन्धित विचारों में द्वंद नज़र आता है।

थेरीगाथा बौद्ध साहित्य का प्रसिद्ध ग्रंथ तो है ही, यह नारी मुक्ति के आंदोलन और स्त्री विमर्श के लिए महत्वपूर्ण ग्रंथ भी है। जिसमें जो धारा के विपरीत महिलों के सफल प्रयत्न हैं अगर हम उस समय सामाजिक–सांस्कृतिक, राजनीतिक और धार्मिक प्रस्तुतियां को ध्यान में रखकर इसका अध्ययन किया जाए, तो निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में यह पहली आवाज थी। थेरीयों की इन गाथाओं को स्त्री मुक्ति की पहली आवाज़ माना जाता है (धर्मवीर)। जिनमें स्त्रियों की अपनी अलग दुनिया है। उनके सुखों की अनुभूति है, दु: खों का गान है, पीड़ा है, मुक्ति की चाह है और मोक्ष प्राप्त करने की आकांक्षा है। भारतीय सामाजिक परिवेश में बुद्ध द्वारा स्त्रियों को संघ में प्रवेश देने का निर्णय एक क्रांतिकारी कदम था। स्त्रियों द्वारा संघ में प्रवेश लेने का कोई कड़ा नियम नहीं था। स्वेच्छा से कोई भी संघ में प्रवेश ले सकती थीं। विवाहित एवं अविवाहित, वृद्ध हो या बालिका, अमीर हो या गरीब किसी भी जाति की हो, वेश्या हो या गणिका– बुद्ध ने सबके लिए संघ के द्वार खोल दिए थे। जाति, धर्म, वर्ग और लिंग के आधार पर विभाजित समाज को बुद्ध की यह परिकल्पना आश्चर्यचकित कर देती है। ऐसे समाज में स्त्री को न केवल मानसिक और शारीरिक बल्कि बौद्धिक और आर्थिक गुलामी के प्रति विद्रोह की शिक्षा दी और यही दबी आवाज को स्वर देकर नई वैचारिक धारा को शुरू करने की पहल की।

आज पहले से भी अधिक बुद्ध के विचारों की जरूरत है। आज जब दुनिया में असमानता बढ़ रही है, एक नए तरीके का आर्थिक साम्राज्यवाद पनप रहा है, और शक्तिशाली देश कमजोर देशों के ऊपर राज़ करने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसे काल में बुद्ध की शिक्षा बहुत ही जरूरी हो जाती है। आज के राजनेता नियम और कानून की दुहाई देते हैं, किंतु ज्यादातर स्वार्थ पूर्ति में लगे रहते हैं। लोगों के आपसी रिश्तों में तनाव है संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। कमजोर वर्गों के प्रति उपेक्षा, शोषण, अत्याचार आदि होते नजर आ रहे हैं। आज भी मनुष्य उंच – नीच का भेदभाव करते हैं। अपने से नीचे वर्ग के लोगों पर अन्याय करते हैं। समाज में अंधविश्वास पाखंड व अंधकार है। इसलिए स्वतंत्रता की वास्तविक लड़ाई आज भी जारी है। कुछ महिलाओं को छोड़कर आज भी महिला स्थिति में कोई खास सुधार नजर नहीं आता हैं। आज भी महिलाओं और शूद्रों को अपने अधिकारों की लड़ाई खुद लड़नी पड़ती है। कानूनी अधिकार चाहे कितने भी हो, लेकिन समाज में इनका कोई खास साथ नजर नहीं आता। लोग अनैतिक, कुंठित, अत्याचार और शोषित होते जा रहे हैं। इस संदर्भ में आज के समाज को युद्ध की नहीं, बुद्ध की जरूरत है। जहाँ शोषित, दबे, कुचले वर्गों को बराबरी का हक मिल सके।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बुद्ध ने स्त्री–हित में बहुत महत्वपूर्ण कार्य किए, लेकिन कहीं–कहीं उनके विचारों में द्वंद नज़र आता है। एक तरफ तो बुद्ध उस समय सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देते हुए स्त्रियों के लिए ज्ञान का मार्ग खोला और उनको संघ में प्रवेश दिया, वहीं दूसरी ओर पितृसत्ता का भी प्रभाव नज़र आता है। पूरी तरह बुद्ध भी पितृसत्ता विचारों से उभर नहीं पाए। जैसे स्त्रियों के लिए आठ नियम बनाना, इससे

स्पष्ट होता है कि स्त्रियों के सुधार के लिए बुद्ध ने कदम तो उठाये, लेकिन पुरुषों के समान समानता और आदर्शपूर्ण स्वतन्त्रता नहीं मिल सकी। बुद्ध काल से शुरू हुआ स्त्री संघर्ष की प्रतिध्वनि वर्तमान समय में भी सुनाई देती है। जो आज भी पितृसत्ता के जाल से नहीं निकल पायी है। वर्तमान में स्त्री को संवैधानिक रूप से सारे अधिकार मिल गये, लेकिन अभी भी समाज में स्त्री का जीवन पितृसत्ता की जकड़ में है।

**संदर्भ**


1. कीर्ति, विमल. थेरीगाथा. सम्यक प्रकाशन, 2020.
2. कोसंबी, धर्मानंद. भगवान बुद्ध : जीवन और दर्शन. अनु. श्रीपाद जोशी, लोकभारती प्रकाशन, 2024.
3. गीता, वी. स्त्रीवाद की सैद्धांतिकी: जेंडर विमर्श. अनु. ऋचा, राजकमल प्रकाशन, 2012.
4. धर्मकीर्ति. बुद्ध का समाज दर्शन. सम्यक प्रकाशन, 2017.
5. धर्मवीर. थेरीगाथा की स्त्रियां और डॉक्टर अम्बेडकर. वाणी प्रकाशन, 2012.
6. नरसू, पी. लक्ष्मी. बौद्ध धर्म और नारी. सम्यक प्रकाशन, 2017.
7. पिप्लायन, मधुकर. आदर्श जातक कथाएं. सम्यक प्रकाशन, 2019.
8. संत, बृजपाल. स्त्री अतीत से वर्तमान. सम्यक प्रकाशन, 2017.
9. सांस्कृत्यायन, राहुल. विनयपिटक. सम्यक प्रकाशन, 2013.
10. सिंह, अल्पना. "इतिहास में गुम एक संघर्ष." जनसत्ता, 24 जुलाई 2022, jansatta.com. Accessed 9 May 2025.
11. श्रीकृष्ण, आनंद. गौतम बुद्ध और उनके उपदेश. राजकमल प्रकाशन, 2019.
12. सुजातो, भिक्खु, अनु. "अम्बपाली थेरीगाथा." SuttaCentral, suttacentral.net/thig13-1/en/sujato. Accessed 12 March 2025.